मैं ढूंढ़ रहा हूं

पुस्तक	:	मैं ढूंढ़ रहा हूं
लेखक	:	आर्थर बिनार्ड
अनुवाद	:	तोमोको किकुचि
छायाचित्र	:	तादाशि ओकाकुरा
मूल्य	:	100रूपये
प्रकाशक	:	एकलव्य
		ई –10 शंकर नगर, बीडीए
		कालोनी, शिवाजी नगर, भोपाल

भारत पाकिस्तान युद्ध की चर्चा हर गली मोहल्ले और उससे भी ज्यादा टीवी चैनलों पर हो रही हैं। युद्ध यानि पाकिस्तान पर हमले के पक्ष में जो जितना अधिक बढ़–चढ़ कर बोल रहा है, वह उतना ही बड़ा राष्ट्रवादी और इसके विरोध में जो जितना ही बोलेगा, उसे उतना ही बड़ा देशद्रोही घोषित किया जा रहा है। युद्ध के पक्ष में बोलकर राष्ट्रभक्ति प्रदर्शित करने वाले दोने खिनोते लोग परमाणु हमले की बात भी ऐसे बोल रहे हैं, जैसे यह दीवाली का कोई छोटा–मोटा बम हो। यहां तक कि रक्षा मंत्री के जिम्मेदार पद पर बैठे पर्रिकर भी लोगों में राष्ट्रवाद के संचार के लिए पाकिस्तान को करारा जवाब देने के लिए परमाणु हमला करने का बयान दे चुके हैं। यह सब बहुत खतरनाक है। ऐसे समय पर हिरोशिमा और नागासाकी का याद आना लाजिमी है। बल्कि इस समय इसे याद करना और लोगों को याद दिलाना दोनों जरूरी है। 'एकलव्य' प्रकाशन ने ऐसे समय में 'मैं ढूंढ रहा हूं' नाम की किताब का प्रकाशन किया है, जो हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु हमले के त्रासद परिणामों को बहुत मार्मिक और एकदम नये तरीके से बयान करती है। कुछ वस्तुएं हैं, जो कविता में अपनी कहानी कहते हैं। जैसे कि एक घड़ी, जो हिरोशिमा में एक नाई की दुकान पर लगी थी। 6 अगस्त 1945 को सवा आठ बजे, जब यहां परमाणु बम गिरा, तब से बन्द है। वह चलना चाहती है, समय को आगे बढ़ाना चाहती है। एक चश्में की कहानी है,जो तामोत्सु नाम के व्यक्ति की आंख पर लगा रहता था। 6 अगस्त 1945 के हमले के बाद तामोत्सु की आंख से यह गिर गया, वे मारे गये। चश्मा उन्हें ढूंढ़ रहा है, वह उनकी नाक पर फिर से बैठ कर दुनिया को देखना चाहता है। कपड़े का एक बैग है, जो मारिको के पास रहता था। 6 अगस्त को वह परमाणु बम गिरने से मारी गयी, झोला उसे ढूंढ़ रहा है। और ऐसे बहुत सारे सामान है, जो हिरोशिमा के शान्ति स्मारक के भूमिगत गोदाम में सुरक्षित हैं, उनके माध्यम से कहीं गयी हैं। इन सामानों की तस्वीर उतारी है तादाशि ओकाकुरा ने और कविता के माध्यम से उनकी कहानी कही है आर्थर बिनार्ड ने। जापानी भाषा से इस पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद किया है तोमोको किकुचि ने।